हम नईं बनात रोटी...

सुमन पटेल

हमारे समाज में बराबरी की बात होती है। कहा भी जाता है कि लड़के और लड़कियाँ बराबर हैं, लेकिन आज भी यह ग़ैर-बराबरी मौजूद है। इस विषय पर कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों के साथ हुई बातचीत में बच्चों ने उनके साथ हुए वाक़यात को प्रस्तुत किया। यह वाक़यात दर्शाते हैं कि लड़कियों और लड़कों की बीच यह ग़ैर-बराबरी कहाँ और किस रूप में दिखाई पड़ती है। बच्चों द्वारा प्रस्तुत यह उदाहरण दर्शाते हैं कि इस मसले पर स्कूल में, कक्षा में बातचीत बेहद ज़रूरी है। -सं.

मैं बच्चों का आकलन करने के लिए एक स्कूल गई थी। मुझे कक्षा तीसरी के बच्चों का हिन्दी विषय में आकलन करना था। बच्चों का आकलन करने के बाद मैंने एक बच्ची को बुलाया, और आकलन टूल के पहले ही सवाल, जिसमें एक फल की दुकान का चित्र दिया गया था, पर बातचीत की। बच्ची इस चित्र को देखकर एक-एक कर केवल कुछ चीज़ों के ही नाम बता रही थी। जैसे– तरबूज, अम्मा, लड़की, कौआ, आदि। मुझे लगा कि वह समझ नहीं पाई है। मैंने हिंट देने के लिए उससे पूछा, "आप मम्मी के साथ बाज़ार जाती हो?" उसने कहा, "नहीं।" मैंने फिर उससे सवाल किया, "आपकी मम्मी बाज़ार जाती हैं घर के कुछ सामान लाने के लिए?" वह बोली, "नहीं।" मैंने फिर पूछा, "फिर आपके घर में बाज़ार से सामान कौन लाता है?" उसने कहा, "पापा लाते हैं।" मैंने फिर पूछा, "कपड़े और चप्पल भी पापा ही लाते हैं?" वह बोली, "बाज़ार का सारा काम पापा ही करते हैं। मम्मी खाना बनाती हैं और खेत जाती हैं।" मैंने बात को आगे बढ़ाते हुए बच्ची से पूछा, "आपके घर में कौन-कौन है?" बच्ची ने बताया, "मम्मी-पापा, भैया, दादी, चाचा।" मैंने पूछा, "घर में कौन-कौन लोग क्या-क्या करते हैं?" बच्ची ने बताया, "पापा काम करने जाते हैं, मम्मी खेत में काम करने जाती हैं।" इस बात से मेरी जिज्ञासा बढ़ी तब मैंने सभी बच्चों से इस सन्दर्भ में बातचीत की। सभी बच्चों ने अपने पापा और मम्मी के काम के बारे में बताया। उनकी बातें सुनकर मुझे समझ आया कि बच्चे समझते हैं कि कुछ काम मम्मी के लिए तय हैं और कुछ पापा

के लिए। मुझे लगा कि बच्चों के साथ इसपर और बातचीत करनी चाहिए। इसलिए शिक्षिका के साथ मिलकर इसकी योजना बनाई।

हमने दूसरे दिन कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों के साथ एक गतिविधि की। सबसे पहले कक्षा के लड़के-लड़कियों से कहा कि 15 मिनट तक वे जो खेल खेलना चाहते हैं खेल सकते हैं। लेकिन शर्त यह है कि लड़कियाँ कक्षा के अन्दर खेलेंगी, और लड़के कक्षा के बाहर। सारे लड़के उठकर बाहर चले गए। तभी कक्षा 3 की एक और कक्षा 4 व 5 की दो लड़कियों ने सवाल किया, "आपने हमें बाहर खेलने क्यों नहीं जाने दिया?" उनके सवाल करते ही दूसरी लड़कियों का ध्यान भी इस तरफ़ गया, और वह भी पूछने लगीं कि उन्हें खेलने के लिए बाहर क्यों नहीं भेजा। मैंने कहा, "हम इसपर थोड़ी देर बाद बात करेंगे।"

15 मिनट बाद लड़के आए। उनसे पूछा, "कैसा लगा खेलकर?" बच्चे बोले, "बहुत अच्छा लगा।" लड़कियाँ कक्षा में ही थीं। अब बच्चों को यूनिसेफ़ द्वारा बनाई गई *मीना* सीरीज़ का एक वीडियो 'आम का बँटवारा' (https://youtu.be/rsZrJmCXd94?feature=shared) दिखाया। यह 12.56 मिनट का वीडियो था। इसमें मीना का भाई, मीना के द्वारा उसके घर में किए जा रहे काम को कम आँकता है। फिर एक पूरे दिन के लिए उनके कामों का बँटवारा हो जाता है। मीना केवल गाय चराने का काम करती है, और उसके भाई को घर का झाड़ू, पोंछा, बर्तन,

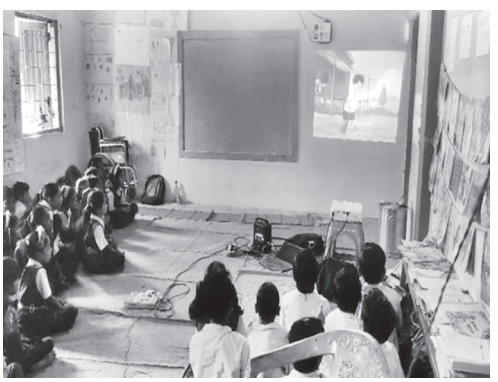

कपड़े, पानी भरना, गाय के रहने के स्थान को साफ़ करना, आदि काम करने पड़ते हैं।

वीडियो दिखाने के बाद मैंने बच्चों से बातचीत की। मेरे शुरूआती सवाल थे, "कहानी में क्या देखा? वह किसके बारे में थी?" कुछ बच्चों ने बताया कि उसमें गाय देखी, जंगल देखा, घर देखा, वहीं कुछ ने बताया कि मीना, उसकी दादी और उसके भाई को काम करते देखा। पर 2 बच्चों ने बताया कि कहानी में दिखाया गया है कि जब कोई लड़का, लड़की का काम करता है, उसे इस काम को करने में दिक़्क़त आती है। एक और बच्चे ने जोड़ा कि हमें लड़कियों या घर के काम को कम नहीं आँकना चाहिए।

मैंने बच्चों से अगला सवाल किया, "कुछ काम आपको इसलिए करने दिए जाते हैं कि आप लड़का हो या लड़की। बताओ, वह कौन-से काम हैं?" मैंने एक-एक बच्चे से पूछना शुरू किया।

एक बच्चे ने बताया (पूरी बातचीत स्थानीय भाषा बुन्देलखण्डी में हुई थी), "मैं रोज़ चूल्हे के पास बैठकर मम्मी से बातें करता था, और

मम्मी खाना भी बनाती जाती थीं। एक दिन मम्मी गाय-भैंस के यहाँ धुआँ कर रही थीं जिससे वह घर आने में लेट हो गईं। मुझे लगा, जब तक मम्मी आएँगी तब तक मैं चूल्हे में आग जला देता हूँ, मम्मी सीधे सब्ज़ी बनाने लगेंगी। मैंने चूल्हे में आग जला दी और वहाँ बैठकर आग में हाथ सेंकने लगा। दादी ने बाहर से धुआँ देखा तो वह अन्दर आईं और पूछा कि चूल्हा किसने जलाया। तब मैंने बोला कि मैंने जलाया। मुझे लगा दादी ख़ुश होंगी। पर वह मुझपर बड़े ज़ोर से चिल्लाईं कि तुम लड़कियों के काम सीख रहे हो। रोज़ घर की बहू के जैसे चूल्हे के पास बैठ जाते हो, और अब चूल्हा भी जलाने लगे। यही सीख रहे हो तुम! मैं तुम्हारी मम्मी को भी डाँटूँगी जो अपने बेटे को रोज़ घर के अन्दर बैठाकर चूल्हा जलाना सिखा रही है। फिर दादी मम्मी पर चिल्लाईं, और मम्मी मुझपर। मुझे बहुत बुरा लगा। उस दिन से जब भी मैं मम्मी के पास बैठने जाता हूँ, मम्मी कहती हैं, 'बाहर जाकर खेलो या टीवी देख लो'।"

एक दूसरे बच्चे ने बताया, "मैंने एक दिन आँगन में झाड़ू लगा दी थी। इसपर मम्मी ग़ुस्सा होकर बोलीं कि यह लड़कियों के काम क्यों कर

रहे हो। दीदी से बोल देते, वह लगा देती। अभी कोई देखेगा तो क्या सोचेगा कि इनकी मम्मी लड़के से झाड़ू लगवाती है।"

एक बच्ची ने बताया, "रोज़ शाम को भैया मैच खेलने जाता है तो उसके साथ कभी-कभी मैं भी खेलने चली जाती हूँ। एक दिन गाँव के एक जन ने भैया और उसके दोस्तों के साथ मुझे भी गेंद खेलते देखा। वो ग़ुस्सा होने लगे कि लड़कियों को लड़कों के खेल क्यों खेलने दे रहे हो, अगर उसके मुँह में गेंद लग गई तो उसकी शादी तक नहीं होगी और उसके माता-पिता को बहुत परेशानी आएगी।"

एक बच्चे ने बताया, "जब हम क्रिकेट खेलते हैं तो मोहल्ले की बड़ी दीदियाँ आ जाती हैं, और डाँटकर हमारा बल्ला ले लेती हैं। वे झूठ-मूठ की गेंद फेंक कर क्रिकेट खेलते हुए रील बनाती हैं, और यहाँ-वहाँ देखती हैं कि कोई उन्हें देख तो नहीं रहा है। एक दिन मैं उनमें से एक दीदी के घर चला गया, और उनकी मम्मी एवं भैया से कहा, 'अपनी बिन्ना को रोक लेना। हम क्रिकेट खेलने जाते हैं तो वो

रोज़-रोज़ वहाँ आ जाती हैं, हमारे गेंद-बल्ला लेकर क्रिकेट खेलती हैं, और फ़ोटो खींचती हैं।' फिर उनकी मम्मी, दीदी पर चिल्लाने लगीं और कहने लगीं, 'हमसे कहके जाती हो कि मन्दिर में दिया रखने जा रही हो, और वहाँ जाके लड़कों के जैसे गेंद-बल्ला खेलने लग जाती हो।' उस वक़्त मुझे भी उनका दीदी को डाँटना बुरा लगा।"

बच्चों के अनुभव सुनने के बाद मैंने एक पुरुष शिक्षक को बुलाया, और उनसे पूछा, "सुबह से आप क्या करके आए हैं, ज़रा बताइए?" सर ने बताया, "नहाया, खाना बनाया और स्कूल के लिए निकल आया।" मैंने पूछा, "रोटी भी बनाई थी?" उन्होंने कहा, "हाँ।" मैंने बच्चों से पूछा, "रोटी कौन-कौन बना लेता है?" लगभग सभी बच्चियों के हाथ उठे। साथ ही 2 लड़कों ने भी हाथ उठाए। मैंने लड़कों से पूछा, "तुमने कैसे सीखा रोटी बनाना?" उनमें से एक बच्चा बोला, "मम्मी की तबीयत ख़राब हुई थी तब मम्मी ने

सिखाया था। उन्होंने कहा था कि रोटी बनाना सीख लोगे तो भूखे तो नहीं रहोगे। मैं पोहा और रोटी-सब्ज़ी बना लेता हूँ।" फिर मैंने दूसरे बच्चे से पूछा, "तुमने कैसे सीखा?" उसने बताया, "मेरी दीदी बहुत ख़तरनाक हैं। वो कोई भी काम अकेले नहीं करती हैं। वो कोई काम तभी करेंगी जब मैं भी उसे करूँगा। अगर वो बर्तन माँजती हैं तो मुझे वे धोने पड़ते हैं, वो रोटी बेलती हैं तो मुझे उन्हें सेंकना पड़ता है। अगर मैं नहीं करूँ तो वो भी नहीं करतीं। इसलिए मम्मी जब कोई काम कहती हैं तो मैं पहले ही चुपचाप करने लगता हूँ।" मैंने पूछा, "क्या करती हैं तुम्हारी दीदी?" उसने बताया, "वो 11वीं में पढ़ती हैं, और भोपाल में रहती हैं।" इन दोनों बच्चों ने एक तीसरे बच्चे की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "मैडम, यह भी रोटी बना लेता है।" जैसे ही सबने उस बच्चे की तरफ़ देखा, वह खड़ा होकर उन बच्चों को मारने लगा और रोने लगा। उसने कहा, "मैडम, हम नहीं बनाते हैं रोटी (हम नईं बनात रोटी...)। यह झूठ बोल रहे हैं। हम नहीं करते लड़कियों के काम।" इसके बाद वह बहुत ज़ोर से रोने लगा। मैंने और शिक्षिका ने एक दूसरे की तरफ़ देखा, और उसे चुप कराया।

लड़कों और लड़कियों से बार-बार कहा जाता है कि यह तुम्हारा काम है, यह तुम्हारा काम नहीं है। यह प्रक्रिया उनके बड़े होने तक चलती रहती है। बाद में जब उनको इन सबकी आदत पड़ जाती है, फिर कहा जाता है कि एक दूसरे के प्रति सहयोग का भाव रखना चाहिए। अब यह सहयोग एक दिन में कैसे आ पाएगा जबकि उस सहयोग की पूर्व में तैयारी ही नहीं हुई होती है।

मैंने यही प्रक्रिया लड़कियों के एक स्कूल में भी अपनाई। यहाँ सभी अनुभव लड़कियों से जुड़े ही आ रहे थे। पहले के स्कूल में लड़के और लड़कियाँ दोनों एक दूसरे के अनुभव सुन रहे थे, और समझ रहे थे कि घर वालों द्वारा ऐसी बातें सिर्फ़ लड़कियों या सिर्फ़ लड़कों को नहीं बोली जाती हैं। मैं चाहती थी कि लड़कियों को लड़कों

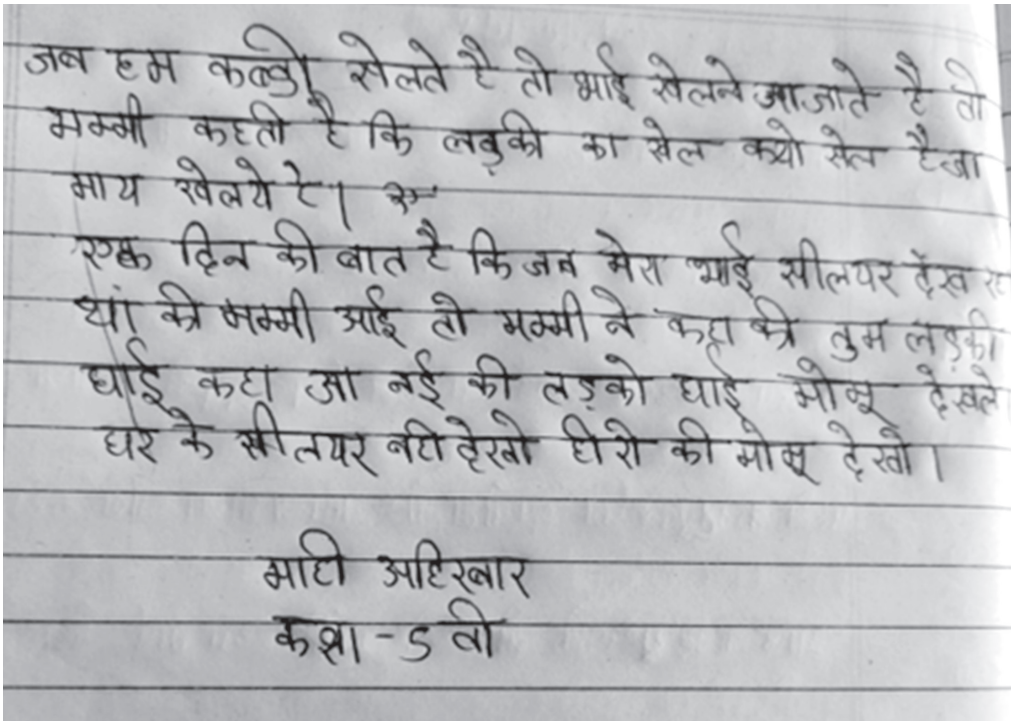

जब हम कब्बडी खेलते है तो भाई खेलने आ जाते है तो
मम्मी कहती है कि लड़की का खेल क्यो खेल रहे भा
भाय खेलये है।
एक दिन की बात है कि जब मेरा भाई सीलयर देख रहा
था तो मम्मी आई तो मम्मी ने कहा कि तुम लड़की
धाई कहा आ गई की लड़को धाई मोटू देखले
घर के सीलयर नही देखो हीरो की मोटू देखो।

भाटी अहिरवार
कक्षा-5वी

के अनुभव भी पता चलें। इसलिए मैंने उनसे अपने भाई के अनुभव बताने को कहा। लड़कियों ने अपने भाइयों के अनुभव भी बताए। एक बच्ची ने बताया, "मम्मी और मैं रोज़ रात में 'अनुपमा' सीरियल देखते हैं। एक दिन वही सीरियल दिन में मेरा भाई देखने लगा। मम्मी ने उससे कहा, 'क्या लड़कियों के जैसे सीरियल देख रहे हो'।"

यह सभी कक्षा 3 से 5 के बच्चे हैं। छोटी उम्र में ही लड़के और लड़की व उनके कामों के बीच विभेदीकरण किया जा रहा है। इस प्रकार, लड़के और लड़की के बीच सहयोगात्मक भाव से इतर एक गहरी खाई खोदी जा रही है। अब सवाल यह है कि हम इस अन्तर को कम कैसे करें, और कैसे बच्चों के बीच समानता स्थापित करें? इस सवाल का एक ही जवाब है, स्कूल। स्कूल के माध्यम से ही हम इस अन्तर को दूर करने का प्रयास कर सकते हैं। सबसे पहले यह ज़रूरी है कि कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को उनके जेंडर के आधार पर अलग-अलग करके नहीं बैठाएँ। लड़कों और लड़कियों के बीच में अन्तर की शुरुआत यहीं से हो जाती है। दूसरा, प्रार्थना में भी लड़कों और लड़कियों की अलग-अलग क़तार लगाने से बचना चाहिए। मैंने एक शिक्षक से पूछा, "प्रार्थना के समय लड़कों और लड़कियों की क़तार अलग-अलग क्यों होती है?" इसपर उनका तर्क था, "प्रार्थना के बाद लड़के तेज़ी से भागकर कक्षा की तरफ़ जाते हैं, और लड़कियाँ आराम से चलकर, इसलिए लड़कों और लड़कियों की अलग-अलग क़तार बनवाते हैं।" इसपर मैंने उनसे कहा, "आपको शायद लड़कों से बात करने की ज़रूरत है। इस समस्या का समाधान यह तो बिलकुल नहीं है।" और तीसरी बात कि स्कूल के लंच के समय यह पूर्व निर्धारित न हो कि लड़के कौन-सा खेल खेलेंगे और लड़कियाँ कौन-सा।

फिर जब हम स्कूल में कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम करते हैं, उसमें भी बच्चों के लिए काम का समान रूप से बँटवारा होना चाहिए। प्राय: किसी भी कार्यक्रम में स्कूल को सजाने,

जिसमें रंगोली, आदि शामिल होती है, का काम लड़कियों को मिलता है, वहीं कहीं कुछ ऊपर बाँधना हो या फ़र्नीचर रखना हो तो यह काम लड़के करते हैं। क्या लड़के रंगोली नहीं बना सकते, और क्या लड़कियाँ फ़र्नीचर नहीं रख सकतीं? घर में शायद यह अवसर उन्हें न के बराबर मिलें, पर इसकी शुरुआत हम स्कूल से कर सकते हैं। इससे बच्चों की आपस में मिलकर काम करने की झिझक दूर होगी, और बाद में भी वह साथ में काम कर सकेंगे।

एक लेखिका ने कहा था, "स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।" लेकिन पुरुष भी पैदा नहीं होते, बनाए जाते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों का ही समाजीकरण समाज में रहकर और समाज के लोगों द्वारा ही होता है। हमने ऊपर कई उदाहरण देखें, जहाँ एक बच्चा रोटी बनाने का नाम सुनते ही रोने लगता है, और दूसरा वह बच्चा है जिसको पता है कि दीदी तब तक काम नहीं करेंगी जब तक वह उनका हाथ नहीं बँटाएगा, वह उस काम को करने के लिए पहले से तैयार है। अब उसे इसमें कुछ अलग नहीं लगता। वह सारे काम को काम की तरह ही देखता है। अतः हमें अपने स्कूलों में यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हमारे स्कूल का हर बच्चा काम को काम की तरह देखे, न कि लड़कियों और लड़कों के काम का चश्मा पहनकर।

सुमन पटेल ने डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर से इतिहास विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। स्कूल में शिक्षकों के साथ बाल साहित्य को लेकर काम करने में उनकी विशेष रुचि है। बच्चों के लिए लघु कहानियाँ और कविताएँ लिखने के साथ-साथ बुन्देली भाषा में शिक्षकों और बच्चों के साथ कहानी सुनाने की विधा को लेकर लगातार प्रयास कर रही हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन सागर, मध्य प्रदेश में टीचर एजुकेटर के रूप में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : suman.patel@azimpremjifoundation.org